ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

मोहम्मडन एंग्लो ओरियन्टल कॉलेज: सर सैय्यद अहमद खाँ

Mohammedan Anglo Oriental College: Sir Syed Ahmed Khan

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 21/11/2021, Date of Publication: 22/11/2021

पवन कुमार
सहायक प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
एस०के०डी०वी०सी०
सिकन्दरपुर, शामली
उत्तरप्रदेश, भारत

सारांश

सर सैय्यद अहमद खाँ न केवल मुसलमानों के लिये ही बल्कि सभी भारतीयों की प्रगति और कल्याण के लिये कार्य किया। मुसलमानों की शिक्षा के लिये मोहम्मडन एंग्लो ओरियन्टल कॉलेज की स्थापना के साथ उनके धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक स्तर को भी सुधारने का प्रयास किया। सर सैय्यद अहमद खाँ ने मुसलमानों को धार्मिक रूढ़िता त्यागकर आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने पर बल दिया, जिससे वे समाज की मुख्य धारा में आ सके और वर्तमान में शासन व प्रशासन में उनकी भागीदारी बढ़े तथा हिन्दुओं के साथ मिलकर देश के विकास में सकारात्मक योगदान दें और देश में राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रबल कर सकें।

Sir Syed Ahmed Khan worked not only for the Muslims but also for the progress and welfare of all Indians. With the establishment of the Mohammedan Anglo-Oriental College for the education of Muslims, he also tried to improve their religious, political and social status.

Sir Syed Ahmed Khan stressed upon the Muslims to abandon religious orthodoxy and take modern education, so that they can come in the mainstream of the society and at present their participation in governance and administration will increase and together with the Hindus make a positive contribution to the development of the country and To strengthen the spirit of national unity in the country

मुख्य शब्दः मोहम्मडन, एंग्लो, ओरियन्टल, अलीगढ़, आधुनिक शिक्षा, मुसलमान, रूढ़िवादिता।
Keywords: Mohammedan, Anglo, Oriental, Aligarh, Modern Education, Muslim, Orthodoxy.

प्रस्तावना

सर सैय्यद अहमद खाँ ने भारतीय मुसलमानों का पुर्नरूत्थान करने के लिए एक समिति बनाने का विचार किया। 15 अप्रैल 1872 ई० को मुस्लिम कार्यकत्र्ताओं की एक सभा बुलाई गई और इसमें मोहम्मडन कॉलेज स्थापित करने का फैसला लिया गया। इसी वर्ष कॉलेज के लिए फंड समिति बनाई गई जो कि कॉलेज के लिये चंदा एकत्रित करती थी और चार वर्ष के कम समय में ही कॉलेज के लिए चंदा एकत्रित कर लिया और महारानी विक्टोरिया के जन्म दिवस पर एक स्कूल अलीगढ़ में स्थापित हुआ, जिसमें 1 जून 1875 को कक्षाएं आरम्भ हो गयी। कुछ समय बाइ लॉर्ड नार्थवुक ने 10,000 रूपये का अंशदान किया और 1877 ई० में यहाँ उच्च विद्यालय की कक्षाएं आरम्भ हो गयी। मैट्रिक परीक्षा के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बन्धित किया गया और 8 जनवरी 1877 ई० को लॉर्ड लिटन ने अलीगढ़ का दौरा किया तो उसने उस विद्यालय को कॉलेज का दर्जा दे दिया। उसी समय यह कॉलेज मुस्लिम शिक्षा का केन्द्र बन गया। इसमें निर्देशन या भाषा का माध्यम अंग्रेजी रखा गया। सर सैय्यद अहमद खाँ की सोच थी कि मुस्लिम समुदाय की मुक्ति पश्चिमी शिक्षा और विज्ञान को सिखने से ही हो सकती है। भारत के मुसलमानों को अंग्रेजी राज्य की उपादेयता और योग्य प्रजा बना सके। उनमें ब्रिटिश के प्रति निष्ठा उत्पन्न कर सके। सन् 1883 ई० में मोहम्मडन एंग्लो ओरियन्टल कॉलेज, अलीगढ़ के प्रिंसिपल के पद का कार्यभार थियोडोर बेक नामक अंग्रेज ने संभाला। भारत आने से पूर्व उन्होंने इंग्लैण्ड में एक भाषण में अपने भारत विरोधी भाव इन शब्दों में प्रकट किए- भारत के लिये संसदीय व्यवस्था अनुपयुक्त है और यदि प्रतिनिधित्व संस्था स्थापित की जाती है तो यह प्रयोग सफल नहीं होगा। मुसलमानों को हिन्दु बहुमत के अधीन होना पड़ेगा। जिसका मुसलमान विरोध करेंगे। सैय्यद पर प्रिंसीपल थियोडोर बेक का प्रभाव था। 27 जनवरी 1883 ई० को पटना में एक भाषण में सर सैय्यद अहमद खाँ ने कहा- "ऐ मेरे मित्रों! हिन्दुस्तान में दो मशहूर कौमे आबाद है जो हिन्दु और मुसलमान के नाम से प्रसिद्ध हैं। हिन्दु होना या मुसलमान होना मनुष्य की आन्तरिक आस्था है, जिसका बाह्य विषयों और पारस्परिक व्यवहार से कोई मतलब नहीं है। साथियों हिन्दुस्तान ही हम दोनों का वतन है। हिन्दुस्तान की हवा में हम दोनों जीते हैं। पवित्र गंगा का पानी हम पीते हैं। हिन्दुस्तान हम दोनों की सहमति, आपसी सहानुभूति और पारस्परिक प्रेम से देश की ओर हम दोनों की उन्नति और भलाई सम्भव है। दोस्तों मैं दोबारा कहता हूँ कि भारत एक दुल्हन की तरह है। जिसकी दो सुन्दर और चमकीली आँखें हैं- हिन्दु तथा मुसलमान अगर वे एक-दूसरे से लड़ेंगे तो सुन्दर दुल्हन भद्दी हो जाएगी और अगर दूसरी से एक समाप्त हो गयी तो वह एक आँख खो देगी।"

एक स्थान पर वह कहता है- "दोनों समुदाय एक सिपाही की दो टाँगें हैं क्योंकि इस प्रकार एक दाई टाँग और स्वाभाविक यह शक्तिशाली है और दूसरी बाई टाँग है और स्वाभाविक यह कमजोर टाँग है।"

27 जनवरी 1884 ई० को गुरदासपुर में बोलते हुए उन्होंने कहा- "हमें हिन्दु और मुसलमान, यह कोशिश करनी चाहिए कि हम एक मन, एक आत्मा होकर एकजुट मिलकर काम करें। संगठित होकर हम एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं। अगर हम संगठिटत नहीं हैं, तो दोनों की नाश और अवनति का यह कारण होगा।" एक ओर स्थान पर उन्होंने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए कहा- "यदि गौवध को छोड़ देने से हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता और दोस्ती कायम करने में मदद मिलती है, तो एक हजार बार अच्छा होगा कि आप गौवध न करें।"

29 जनवरी 1884 ई० को अमृतसर में हिन्दुओं की मिली-जुली सभा में सर सैय्यद अहमद खाँ ने कहा- "मैंने निःसन्देह अलीगढ़ में कॉलेज की स्थापना मुसलमानों की गिरती दशा को सुधारने के विचार से की है, किन्तु इसमें हिन्दु-मुस्लिम दोनों पढ़ते हैं और वह दीक्षा जो भारत में अभिष्ठ है, दोनों को ही दी जाती है। हम लोग आपस में किसी को हिन्दु, किसी को मुसलमान कहें, पर विदेशों में हम सब हिन्दुस्तानी कहलाते हैं। यही कारण है हिन्दुओं के अपमान से मुसलमानों का अपमान होता है।"

मुसलमान धार्मिक कट्टरता एवं रूढ़िवादिता को त्यागकर आधुनिक शिक्षा ग्रहण करें ताकि प्रशासन में भागीदारी बढ़े और हिन्दुओं के साथ मिलकर, राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को बल मिल सकें।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान समय में भारत में मुसलमानों में शिक्षा की स्थिति अच्छी नहीं है। 19वीं शताब्दी में सर सैय्यद अहमद खाँ जैसे दूरदर्शी व्यक्ति ने उस समय शिक्षा पर जागृति पैदा करने के साथ शिक्षा के केन्द्र भी स्थापित किये। वर्तमान परिदृय में मुसलमानों को शिक्षा के प्रति जागृति पैदा करके अपने समाज को शिक्षित करके राष्ट्रहित में अपना सहयोग बढ़ाना चाहिये।

निष्कर्ष

सर सैय्यद अहमद खाँ भारत में मुसलमानों का प्रमुख नेता था। 1857 ई० की क्रान्ति के बाद ब्रिटिश घृणा के विशेष पात्र मुसलमान हुए थे। इसी कारण को देखते हुए अहमद खाँ ने मुसलमानों के उत्थान के लिये मोहम्मडन एंग्लो ओरियन्टल कॉलेज की स्थापना की, जिससे मुसलमानों का शैक्षिक स्तर में सुधार आ सके। इसके अतिरिक्त भी मुसलमानों के सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्तर को भी सुधारने के अनेक कार्य अहमद खाँ ने किये। इसके अतिरिक्त हिन्दु और मुसलमानों दोनों में सामंजस्य और सौहार्द्र बनाने के वे पक्षधर थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शान मुहम्मद, सैय्यद अहमद खाँ-ए पॉलिटिल बायोग्राफी, पृ० 79*
2. *एम० मश्लुद्दीन सिद्दीकी, पूर्व उद्धृत, पृ० 14*
3. *एम०एस० जैन, आधुनिक काल में मुस्लिम राजनीतिक विचारक, पृ० 19*
4. *रामगोपाल, भारतीय मुसलमानों का राजनीतिक इतिहास, पृ० 44-45*
5. *विमल प्रसाद, दा फाउन्डेशन आॅफ मुस्लिम नेशनलिज़्म, पृ० 151*
6. *ए०सी० बनर्जी, टू नेशन*
7. *अलीगढ़ इन्स्टीट्यूट गजट, 7 अप्रैल, 1883, पृ० 388*
8. *ताराचन्द, भारतीय स्वन्त्रता आन्दोलन का इतिहास-तृतीय, पृ० 305*